पाठ - रैदास के पद

कार्यपत्रिका - 01

समय: 40 मिनट **पूर्णांक:** 25

Section A: वस्तुनिष्ठ प्रश्न (MCQs & Assertion-Reason)

प्रश्न १. "जैसे सोने मिलत सुहागा" लोकोक्ति का प्रयोग रैदास ने भक्त और भगवान के बीच किस प्रक्रिया को दर्शाने के लिए किया है?

(क) ईश्वर की विमुखता को प्रकट करने के लिए।

(ख) सोने के आभूषणों के व्यापार को बढ़ावा देने के लिए।

(ग) आराध्य के संपर्क में आकर भक्त की आत्मा के पूर्ण शुद्ध और उज्ज्वल होने को दर्शाने के लिए।

(घ) केवल कठिन व्रत रखकर शरीर को सुखाने के लिए।

प्रश्न २. "तुम्हरे चरन कमल एक भरोसां" पंक्ति में कौन-सा विशिष्ट अलंकार प्रयुक्त हुआ है?

(क) उपमा अलंकार (ख) अनुप्रास अलंकार

(ग) रूपक अलंकार (घ) अतिशयोक्ति अलंकार

प्रश्न ३. कथन-कारण प्रश्न (Assertion-Reason Questions):

कथन (A): संत रैदास ने अपने पदों में मध्यकाल में प्रचलित तीर्थ यात्राओं और कठिन उपवासों (व्रतों) को आवश्यक नहीं माना है।

कारण (R): उनका दृढ़ विश्वास था कि ईश्वर बाह्य आडंबरों से नहीं, बल्कि अंतःकरण की शुद्धता और अडिग विश्वास से ही प्राप्त होता है।

(क) कथन A सही है, परंतु कारण R गलत है।

(ख) कथन A गलत है, परंतु कारण R सही है।

(ग) कथन A और कारण R दोनों सही हैं तथा कारण R, कथन A की सही व्याख्या करता है।

(घ) कथन A और कारण R दोनों सही हैं, परंतु कारण R, कथन A की सही व्याख्या नहीं करता है।

प्रश्न ४. पदों में आए प्रतीकों का उनके सही दार्शनिक अर्थों के साथ उचित मिलान (Match the Following) कीजिए:

स्तंभ 'क'
(1) चंदन - पानी
(2) चंद - चकोरा
(3) दीपक - बाती
(4) स्वामी - दासा

स्तंभ 'ख'
(अ) असीम प्रीति में स्वयं को जलाकर ज्ञान फैलाना
(ब) दास्य-भाव की पराकाष्ठा और पूर्ण शरणागति
(स) अंग-अंग में प्रभु की सुगंध का एकाकार होना
(द) बिना पलक झपकाए आराध्य के दर्शन की तीव्र लालसा

Section B: अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

प्रश्न ५. संत रैदास (रविदास) का जन्म उत्तर प्रदेश के किस ऐतिहासिक शहर में हुआ माना जाता है?

उत्तर - .....

.....

.....

प्रश्न ६. रैदास के सरल ब्रजभाषा में लिखे गए पद किस महान पवित्र धर्मग्रंथ में आदर सहित शामिल किए गए हैं?

उत्तर - .....

egyanarchive

.....

.....

Section C: लघु उत्तरीय प्रश्न (2 अंक)

प्रश्न ७. "अब कैसे छूटै राम रट लागी"—भक्त के मन में राम के नाम की रट को लेखक ने अपरिवर्तनीय क्यों माना है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

प्रश्न ८. संत नामदेव के पद के अनुसार, "पानी बिनु मीन तलफैं" पंक्ति द्वारा ईश्वर के वियोग की तुलना किस प्रकार की गई है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

Section D: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (4 अंक)

प्रश्न ९. "मध्यकाल के संत कवियों की वाणी आज २१वीं सदी में भी समानता, प्रेम और भाईचारे का शाश्वत संदेश देती है।" रैदास के पद' के मुख्य घटनाक्रम और वैचारिक संदेश के आधार पर इस कथन की सविस्तार समीक्षा कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

Section E: रचनात्मक/मूल्य आधारित प्रश्न (HOTS - 5 अंक)

प्रश्न १०. पाठ में प्रयुक्त "मन, क्रम, वचन" की शुद्धता के सिद्धांत को आधार बनाकर, आज के आधुनिक समाज में फैली सांप्रदायिकता और जातिगत भेदभाव को मिटाने के लिए छात्रों द्वारा चलाई जाने वाली 'सामुदायिक समरसता योजना' (Action Plan) तैयार कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तरकुंजी (कार्यपत्रिका - 1)

1. **उत्तर:** (ग) आराध्य के संपर्क में आकर भक्त की आत्मा के पूर्ण शुद्ध और उज्ज्वल होने को दर्शाने के लिए।
2. **उत्तर:** (ग) रूपक अलंकार (चरणों पर कमल का अभेद आरोप होने के कारण)।
3. **उत्तर:** (ग) कथन A और कारण R दोनों सही हैं तथा कारण R, कथन A की सही व्याख्या करता है।
4. **उत्तर मिलान:** (1) -> (स), (2) -> (द), (3) -> (अ), (4) -> (ब)।
5. **उत्तर:** संत रैदास का जन्म काशी (**वाराणसी**) में हुआ था।
6. **उत्तर:** रैदास के पद **'आदि श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी'** में आदर सहित संकलित हैं।
7. **उत्तर:** क्योंकि यह रट भक्त के अंतःकरण का हिस्सा बन चुकी है। जैसे चंदन का गुण पानी में मिलकर अलग नहीं हो सकता, वैसे ही भक्त की आत्मा राम के नाम की लौ में पूरी तरह एकाकार हो चुकी है, जो अमिट है।
8. **उत्तर:** नामदेव जी कहते हैं कि जिस प्रकार पानी (जल) के बिना मछली (मीन) एक पल भी जीवित नहीं रह सकती और तड़प-तड़पकर प्राण दे देती है, ठीक वैसे ही राम के नाम के बिना भक्त का जीवन तड़पता और व्याकुल रहता है।
9. **उत्तर:** संत रैदास ने १५वीं शताब्दी में उस समय काव्य रचना की जब समाज छुआछूत, ऊँच-नीच और बाह्य कर्मकांडों की रूढ़ियों में जकड़ा हुआ था। उन्होंने घोषित किया कि ईश्वर किसी जाति या मंदिर में नहीं, बल्कि हर मनुष्य के भीतर चंदन-पानी की तरह समाया हुआ है। उनकी वाणी यह संदेश देती है कि जन्म से कोई बड़ा या छोटा नहीं होता; मन की शुद्धता और आंतरिक प्रेम ही सच्चा धर्म है। आज के समय में भी समाज में भ्रातृत्व और समता स्थापित करने के लिए उनकी यह अमूर्त विचारधारा पूर्णतः प्रासंगिक और मार्गदर्शक है।
10. **उत्तर: 'सामुदायिक समरसता' कार्य-योजना (Action Plan):** * **१. सह-भोज (लंगर परंपरा):** विद्यालयों में समय-समय पर सभी जातियों और वर्गों के छात्रों का सामूहिक मध्याह्न भोजन आयोजित करना, जहाँ सब साथ बैठें।
    - **२. वैचारिक जागरूकता (बाल-सभा):** कबीर, रैदास और नामदेव जैसे संतों की बानी पर आधारित अंतर्विद्यालयी गायन और नाटक प्रतियोगिताओं का आयोजन करना।
    - **३. नैतिक आचरण संकल्प:** "मन, क्रम, वचन" से किसी भी सहपाठी के प्रति जातिसूचक या अपमानजनक शब्दों का प्रयोग न करने की सामूहिक प्रतिज्ञा लेना।
    - **४. बस्तियों में सेवा कार्य:** निर्धन और उपेक्षित वर्गों के बच्चों को निःशुल्क शिक्षा और पाठ्य सामग्री देकर सामाजिक असमानता को कम करना।

egyanarchive

पाठ - रैदास के पद

कार्यपत्रिका - 02

समय: 40 मिनट **पूर्णांक:** 25

Section A: अपठित गद्यांश एवं भाषा-बोध (Comprehension & Grammar)

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़कर दिए गए प्रश्नों के सटीक उत्तर लिखिए: >

"मध्यकालीन संत काव्य परंपरा में बाह्य आडंबरों का खंडन और आंतरिक शुचिता का मंडन ही साहित्य का मुख्य ध्येय रहा है। संत रैदास और कबीर जैसे क्रांतद्रष्टा कवियों ने समाज को उस समय एक नई दिशा दिखाई जब वह जाति-पाति और अंधविश्वासों के घने कुहासे में भटका हुआ था। संतों की भाषा 'लोकधर्मी भाषा' थी, जो सीधे जनसमूह के हृदय तक पहुँचती थी। 'चंदन-पानी' या 'दीपक-बाती' जैसे सरल प्रतीकों के माध्यम से उन्होंने यह सिद्ध किया कि परमात्मा और आत्मा का संबंध किसी मंदिर की दीवारों में नहीं, बल्कि अंतःकरण के अटूट विश्वास में निहित है। आज के वैज्ञानिक युग में भी संतों का यह समतावादी दर्शन वैश्विक शांति और मानवीय सौहार्द को बनाए रखने के लिए अनिवार्य है।"

प्रश्न १. गद्यांश के अनुसार, मध्यकालीन संत कवियों की भाषा की सबसे बड़ी विशेषता क्या थी?

(क) वह अत्यधिक कठिन और क्लिष्ट संस्कृत निष्ठ भाषा थी।

(ख) वह आम जनसमूह के हृदय तक पहुँचने वाली 'लोकधर्मी व्यावहारिक भाषा' थी।

(ग) उसमें केवल अंग्रेज़ी अखबारों और पालिटिक्स की चर्चा होती थी।

(घ) वह केवल महँगे यज्ञों और कर्मकांडों पर बल देती थी।

प्रश्न २. पाठ के व्याकरण के अनुसार, 'तीरथ' और 'बरत' शब्दों का सही शब्द-भेद वर्गीकरण क्या होगा?

(क) ये दोनों शब्द पूर्णतः तत्सम संस्कृत शब्द हैं।

(ख) ये दोनों शब्द प्राचीन आंचलिक 'तद्भव' शब्द हैं, जिनका आधुनिक रूप तीर्थ और व्रत है।

(ग) ये दोनों विदेशी उर्दू-फारसी के शब्द हैं।

(घ) ये दोनों विस्मयादिबोधक अव्यय पद हैं।

प्रश्न ३. "जाकी अंग-अंग बास समानी"—इस पंक्ति में आए 'अंग-अंग' पद में कौन-सा अलंकार और शब्द-प्रकार है?

(क) उपमा अलंकार और संज्ञा शब्द

(ख) रूपक अलंकार और सर्वनाम शब्द

(ग) अनुप्रास/पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार और पुनरुक्त शब्द-युग्म

(घ) अतिशयोक्ति अलंकार और क्रिया पद

Section B: अतिलघु उत्तरीय प्रश्न (1 अंक)

प्रश्न ४. "जैसे चितवत चंद चकोरा"—इस पंक्ति में 'चकोर' पक्षी की क्या विशिष्ट प्राकृतिक विशेषता बताई गई है?

उत्तर - .....

.....

.....

प्रश्न ५. पाठ में आए 'अंदेसा' और 'ज्योति' शब्दों के शब्दकोश के अनुसार प्रामाणिक अर्थ लिखिए।

उत्तर - .....

.....

.....

egyanarchive

Section C: लघु उत्तरीय प्रश्न (2 अंक)

प्रश्न ६. संत नामदेव के प्रथम पद "राम कोइ न किसही केरा। जैसे तरवर पंखि बसेरा" का मूल दार्शनिक भाव स्पष्ट कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

प्रश्न ७. रैदास ने अपने दूसरे पद में "हरि सो जोरि सबन सो तोरों" कहकर सांसारिक संबंधों के विषय में क्या विचार प्रकट किया है?

उत्तर - .....

.....

.....

.....

Section D: दीर्घ उत्तरीय प्रश्न (4 अंक)

प्रश्न ८. "भक्त और भगवान का संबंध अटूट और पारस्परिक रूप से एक-दूसरे पर निर्भर है।" 'रैदास के पद' में प्रयुक्त किन्हीं तीन प्राकृतिक उपमाओं के आधार पर इस कथन को तार्किक रूप से सिद्ध कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

Section E: रचनात्मक/मूल्य आधारित प्रश्न (HOTS - 5 अंक)

प्रश्न ९. "समूचे जनसमूह में भाषा और भाव की एकता और सौहार्द का होना अच्छा है" — हजारीप्रसाद द्विवेदी। इस सुप्रसिद्ध कथन और रैदास के समतावादी संदेश को ध्यान में रखते हुए, अपने विद्यालय में 'अखिल भारतीय भाषा-संगम एवं सांस्कृतिक एकता मंच' की स्थापना के लिए एक ५ सूत्रीय रूपरेखा (Action Plan) तैयार कीजिए।

उत्तर - .....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

.....

egyanarchive

उत्तरकुंजी (कार्यपत्रिका - 2)

1. **उत्तर:** (ख) वह आम जनसमूह के हृदय तक पहुँचने वाली 'लोकधर्मी व्यावहारिक भाषा' थी।
2. **उत्तर:** (ख) ये दोनों प्राचीन आंचलिक 'तद्भव' शब्द हैं, जिनका आधुनिक रूप क्रमशः तीर्थ और व्रत है।
3. **उत्तर:** (ग) अनुप्रास/पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार और पुनरुक्त शब्द-युग्म।
4. **उत्तर:** चकोर पक्षी चंद्रमा का परम प्रेमी माना जाता है, जो पूरी रात बिना पलक झपकाए केवल चाँद को ही निहारता रहता है।
5. **उत्तर:** * **अंदेसा:** सोच, चिंता, शक, आशंका या दुविधा।
    - **ज्योति / जोति:** प्रकाश, रोशनी, लौ या सूर्य का तेज।
6. **उत्तर:** नामदेव जी समझाते हैं कि इस संसार में कोई भी संबंध स्थायी नहीं है। यह जीवन और संसार ठीक वैसा ही है जैसे किसी पेड़ (तरवर) पर रात के समय बहुत से पक्षी आकर बसेरा करते हैं और सुबह होते ही उड़ जाते हैं; अतः संसार क्षणभंगुर है।
7. **उत्तर:** रैदास का आशय है कि उन्होंने अपना सच्चा नाता केवल उस अविनाशी हरि (ईश्वर) से जोड़ा है। ईश्वर से सच्चा प्रेम होने के बाद संसार के स्वार्थी, झूठे और नश्वर संबंधों से मोह स्वतः ही टूट जाता है, जो मुक्ति के लिए आवश्यक है।
8. **उत्तर:** रैदास ने इसे तीन अद्भुत उपमाओं से सिद्ध किया है:
    - **चंदन-पानी:** पानी के बिना चंदन घिस नहीं सकता और चंदन के बिना पानी सुवासित नहीं हो सकता।
    - **दीपक-बाती:** दीपक के बिना बाती का अस्तित्व नहीं और बाती के बिना दीपक प्रकाश नहीं दे सकता।
    - **मोती-धागा:** धागे के बिना मोती बिखर जाएंगे और मोती के बिना धागा मूल्यहीन रहेगा।

ये तीनों प्रतीक सिद्ध करते हैं कि भक्त और आराध्य का संबंध परस्पर पूरक और अविभाज्य है।

9. **उत्तर: 'भाषा-संगम एवं सांस्कृतिक एकता मंच' की ५ सूत्रीय रूपरेखा:** * **१. बहुभाषी सुमिरन (प्रार्थना सभा):** प्रतिदिन प्रातःकालीन सभा में रैदास और नामदेव के पदों का हिंदी और मराठी दोनों भाषाओं में सामूहिक गायन करना।
    - **२. कुरुचि और आडंबर निषेध:** विद्यालय परिसर में किसी भी प्रकार के जातिगत या वर्ग-आधारित भेदभावपूर्ण शब्दों के प्रयोग पर पूर्ण प्रतिबंध लगाना।
    - **३. अंतःकरण शुचिता सत्र:** सप्ताह में एक बार छात्रों के लिए 'नैतिक आचरण और आत्म-मंथन' के अनौपचारिक सत्र आयोजित करना।
    - **४. सेतु-चित्र प्रदर्शनी (भाषा संगम):** विद्यालय की दीवारों पर चार्ट के माध्यम से विभिन्न भारतीय भाषाओं के समान अर्थ वाले शब्दों (जैसे- तोता, मक्खन, संगीत, देश) का प्रदर्शन करना।
    - **५. समरसता उत्सव:** प्रतिवर्ष कबीर, रैदास और नामदेव जयंती पर 'सांस्कृतिक सौहार्द मेला' आयोजित करना, जहाँ सभी पृष्ठभूमि के छात्र अपनी कला का प्रदर्शन कर सकें।

egyanarchive